RECENT RESEARCHES in
SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES

Issue : 1, Year : 4
Apr.-May-Jun. (2017), Pages : 74 - 78
ISSN 2348 – 3318

International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

शैलेश मटियानी का गद्य साहित्य : विवेचन एवं मूल्यांकन

कु0 भावना अग्रवाल
शोध छात्रा–हिन्दी विभाग
राज0 स्ना0 महा0
रामनगर (नैनीताल)

Received : 29/03/2017 *1st BPR* : 30/03/2017 *2nd BPR* : 05/04/2017 *Accepted* : 10/04/2017

ABSTRACT

श्री शैलेश मटियानी जी एक ऐसे कथाकार हैं जिन्होंने कहानियों के साथ–साथ उपन्यास और आत्मकथा भी लिखी। उत्तर भारत के आंचलिक हिन्दी उपन्यास और कहानियों को सच्चे अर्थों में आंचलिक बनाने में यदि किसी साहित्यकार का प्रासंगिक योगदान है तो वह हैं शैलेश मटियानी।

मटियानी जी की कथा शैली बडी प्रभावोत्पादक है। इन्होंने अपनी कथाओं को उन सभी गद्य शैलियों में प्रस्तुत किया जो पाठक को अपनी ओर आकर्षित करने में सक्षम है। वर्णनात्मक, चित्रात्मक, भावात्मक शैली इनके कथा साहित्य की सर्वोत्कृष्ट शैली है। ये जब किसी स्थान व्यक्ति या स्थिति–परिस्थिति का वर्णन करते हैं तो उसकी गहराई तक पहुँच जाते हैं। सूक्ष्म दृश्य दर्शन इनकी कथा शैली की एक विशेषता है।

इस महान कथाकार ने लोक जीवन की झाँकी को अपने उपन्यासों के कई प्रसंगों में उभारा है। यही नहीं इन्होंने अपने एक उपन्यास को जागर की सूती शैली में उभारकर उसकी भाषा को उसी तरह तोड़ और मरोड़ दिया जैसे एक सूत्रधार जागरी की भाशा अपने डोर में हुड़के के साथ जागरों की भाषा को प्रस्तुत करता है।

मानवीय भावों को अपनी लेखनी से उभारने में दक्ष यह अद्वितीय साहित्यकार एक तरह से ग्राम्यजनों के मनोविज्ञान का आधिकारिक वैज्ञानिक है। मटियानी जी ने अपनी अनुभूति, कल्पना और अभिव्यक्ति का सदुपयोग जिस कथा साहित्य के सृजन में किया उसके विषय तथा पात्र उस वर्ग से आते हैं जो समाज के दबे कुचले लोग हैं। यही नहीं इन लोगों को दबाने और कुचलने की धूर्तता करने वाले तत्वों को भी अपनी लेखनी का विषय बनाया।

मटियानी जी एक उपन्यासकार के साथ–साथ एक कुशल कहानीकार भी रहें हैं। वे अपनी कहानियों में मूल संवेदनाओं को उकेरने में सफल हुये हैं। उन्होंने अपने भोगे हुये यथार्थ को ही अपनी तूलिका के माध्यम से कागज में स्थान दिया है। मटियानी जी की कहानियों में भी आंचलिकता का समग्र प्रभाव दिखता है। पर्वतीय अंचल के होने के कारण ग्रामीण जीवन की समस्त अभिव्यक्ति उनकी कहानियों में मिलती है। कहानी की नई संवेदना में आत्मा अन्वेषण का बड़ा योगदान है। वैसे तो सभी लेखन आत्म विश्लेषण होता है पर मेरा तात्पर्य यहाँ मुखर रचना विधान से है। रचनाकार अपना अध्येता जब स्वयं बनता है तो अपने अंतरा से चुने हुये मोती निकालता है।

वर्तमान में कथा विधा साहित्य की सबसे लोकप्रिय विधा है। आज हम जिन्हें कहानी या उपन्यास कहते हैं वे विधाएँ भारतीय साहित्य में अनेक रूपों में विद्यमान थीं। महाकाव्यों के प्रबन्धात्मक रूप के पश्चात इस विधा ने खण्ड काव्य और चम्पू काव्य में प्रवेश किया। कालान्तर में नाटक, एकांकी, रूपक और लोकनाट्य इसी कथा के कथानकों से बनें। कहने का आशय यह है कि साहित्य की प्रत्येक विधा का संबंध किसी न किसी घटना से अवश्य होता है। साहित्य में यही घटना बाद में अनेक रूपों में विभक्त हो जाती है।

इसी कथा साहित्य के बीज हमें वेंदों से प्राप्त होते हैं। उपनिषदों में भी अनेक कथाओं के माध्यम से तत्व ज्ञान कराया गया है। कठोपनिषद के यम और नचिकेता, तैत्तरीय और माङ्क्य उपनिषद के तीत्तर और मेंढक तत्वज्ञान के उपदेशक हैं। प्रश्नोपनिषद में गुरू और शिष्यों से संबंधी घटनाएं प्रश्नों के कारण बने। केनोपनिषद में अग्नि, जल, पवन तथा उमा की कहानी है। वेद और उपनिषदों के पश्चात् उस रामायण का सृजन हुआ जिसकी कथा आज भी अनेक काव्यों, नाटकों, कहानियों और उपन्यासों के कथानक हैं। रामायण के बाद हम महाभारत जैसे महाकाव्यों को पढते हैं, जिसमें वेदव्यास जी ने असंख्य कथाओं को एक साथ सम्पादित किया है।

कालान्तर में महाभारत की कथाओं से अनेक प्रबन्धात्मक साहित्य निकला। इन्हीं महाकाव्यों से अनेक नाटक और महाकाव्यों का सृजन हुआ। आज इन कथाओं को लेकर कई उपन्यास और कथाएं लिखी जा रही हैं। कथाओं की इस चर्चा में हम उन

RECENT RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES
Issue : 1, Year : 4, Apr.-May-Jun. (2017), Pages : 74-78 , ISSN 2348 – 3318

कु0 भावना अग्रवाल

International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

आख्यायिकाओं और रूपकों की उपेक्षा नहीं कर सकते, जो कि कालान्तर में अनेक साहित्यकारों ने रची हैं। कथासरितसागर और पंचतंत्र की कथाएं ऐसी ही कथाएं हैं। इस सन्दर्भ में वाण भट्ट की कादम्बरी और हर्ष चरित जैसे महान ग्रन्थों का उल्लेख करना भी समीचीन होगा, जिसमें भारतीय संस्कृति की झलक दिखायी देती है।

पुराणों और श्रीमद्भागवत की कथाओं के अतिरिक्त जातक कथाओं ने भी जन सामान्य को अपनी ओर आकर्षित किया है। इन कथाओं में जहाँ एक ओर धर्म का अंश छिपा है, वहीं शिक्षा ने भी अपना स्थान बनाया है। इनमें जहाँ गरीब ब्राह्मण को कथा का नायक बनाया जाता है, वहीं सामान्य लकड़हारे और गोप समूह को भी कथा का पात्र बनाया गया है। क्षत्रिय से लेकर वणिक तक इन कथाओं के पात्र हैं।

समय व्यतीत होता गया। भारत पर पूर्व में मुगल शासकों का शासन रहा, लेकिन जैसे ही इस पर अंग्रेजों ने अपना प्रभुत्व स्थापित किया, यहाँ की जीवन शैली में परिवर्तन आने लगा, जिससे साहित्य में भी परिवर्तन आना स्वाभाविक था। अंग्रेज अफसरों को स्थानीय भारतीय भाषा सिखाने के लिए सन् 1800 में फोर्ट विलियम कालेज की स्थापना की गई। उस समय हिन्दी ही ऐसी भाषा थी जो तत्कालीन समाज में काफी लोकप्रिय थी। इसलिए उन्होंने इस कालेज के विद्वान प्राध्यापकों से कुछ ऐसे अनुवाद कराये जो हिन्दी में थे। इसी कालेज के विद्वान श्री लल्लू लाल मिश्र से जहाँ बैताल पच्चीसी की कथाओं का अनुवाद हिन्दी में करवाया। वहीं श्री सदल मिश्र द्वारा नचिकेतापाख्यान लिखवाया। इस लेखन धारा में इंशा अल्लाहखान से 'रानी केतकी की कहानी', किशोरी लाल गोस्वामी से 'इन्दुमती' तथा बंग महिला से 'दुलाईवाली' जैसी कहानियां लिखवाई। परन्तु भारतीय कथा साहित्य का प्रभाव होने के कारण इन कहानियों को पूर्ण कहानी नहीं माना गया। सन् 1900 में जब चंद्रधर शर्मा गुलेरी ने पाश्चात्य कहानी के तत्वों के आधार पर गौरांग प्रभुओं की विजय गाथा 'उसने कहा था' मुक्त कहानी लिखी तो उसी को हिन्दी की प्रथम कहानी स्वीकारा गया। इसी मध्य प्रेमचन्द जैसे अमर कथाकार ने उपन्यास और कहानियां लिखकर हिन्दी साहित्य का भण्डार भरना प्रारम्भ किया। इसी क्रम में जय शंकर प्रसाद, यशपाल, जैनेन्द्र, आचार्य चतुरसेन, विश्वम्भरनाथ कौशिक, सुदर्शन जैसे कथाकारों ने अपने लेखन कौशल से हिन्दी कथा संसार में अनेक कथा कृतियों का सृजन किया।

श्री शैलेश मटियानी जी एक ऐसे कथाकार हैं जिन्होंने कहानियों के साथ–साथ उपन्यास और आत्मकथा भी लिखी। उत्तर भारत के आंचलिक हिन्दी उपन्यास और कहानियों को सच्चे अर्थों में आंचलिक बनाने में यदि किसी साहित्यकार का प्रासंगिक योगदान है तो वह हैं शैलेश मटियानी।

श्री शैलेश मटियानी ने ग्रामीण और नगरीय समाज की जो सच्ची झांकी प्रस्तुत की वह उनकी कार्ययित्री प्रतिभा का प्रमाण है। जैसा की सर्वविदित है एक सच्चा कहानीकार सूक्ष्म दृष्टा होता है। उनकी यही दृष्टि जब समाज के विभिन्न क्रियाकलापों की सूक्ष्मता से अवलोकन करती है तो पाठक उनके हृदयगत भावों से तादात्म्य के साथ–साथ शब्द चित्रों को भी अपने मस्तिष्क में उतारकर आनन्दित होता है। शैलेश मटियानी एक ऐसे ही साहित्यकार हैं जिनकी हर साहित्यिक विधा में यही साहित्यकला अवतरित हुई है। ये जब अपने शब्द चित्रों को अपनी लेखनी से कागज पर उतारते हैं तो उस समय इतने तन्मय हो जाते हैं कि कैमरे की आँख के समान इनकी दृष्टि से कुछ भी नहीं छिपता। इनके उपन्यास 'उत्तरकाण्ड' में इनकी यही चित्रात्मक शैली पाठकों के आगे साकार चित्र उपस्थित कर देती है। कथाकार कथाकार होता है, वह अपनी कहानी या उपन्यास के कथानक को इस तरह शब्दों में गूंथता है कि उससे उपन्यास की काल्पनिक कथा भी यथार्थ बन जाती है। मटियानी जी के उपन्यास और कहानियों के कथानक भी इसी प्रकार के हैं।

मटियानी जी के कथा साहित्य के अवलोकन से साफ होता है कि इस महान कथाकार के पास अनुभवों का विशाल भण्डार था। इनको ये अनुभव समाज ने भी दिए और स्वयं के व्यक्तिगत जीवन ने भी। इनकी कल्पनाशीलता ही इनकी कथाओं का कारण बनीं। मटियानी जी ऐसे साहित्यकार हैं जिन्होंने हिमालय की गोद में जन्म लिया। यहाँ खिलते पुष्प सहृदय लेखक को हंसते हुए दिखायी देते हैं। जहाँ सदानीरा सरिताएं गीत गाती अनुभूत होती हैं, जहाँ वृक्षों से टकराकर पवन वंशी बजाता सुनाई देता है। ऐसे सुरम्य वातावरण में जन्म लेने वाला साहित्यकार फिर काल्पनिक क्यों नहीं होगा। फिर कथाकार तो काल्पनिकता को अपनी सृजनशीलता में उतारता है फिर हमारा यह कथाकार काल्पनिकता का धनी क्यों नहीं होगा।

मटियानी जी की अभिव्यक्ति बडी बलबती है। इन्होंने अपने उपन्यास और कहानियों की भाषा को कुछ इस तरह ढाला है कि जहाँ ये वातावरण और विषय पर अपनी लेखनी चलाते हैं, वहाँ इस भाषा से ऐसा चित्र खिंचते हैं कि पाठक इसमें डूब जाता है।

इस महान कथाकार ने लोक जीवन की झाँकी को अपने उपन्यासों के कई प्रसंगों में उभारा है। यही नहीं इन्होंने अपने एक उपन्यास को जागर की सूती शैली में उभारकर उसकी भाषा को उसी तरह तोड़ और मरोड़ दिया जैसे एक सूत्रधार जागरी की भाषा अपने डोर में हुड़के के साथ जागरों की भाषा को प्रस्तुत करता है।

मटियानी जी की कथा शैली बडी प्रभावोत्पादक है। इन्हों अपनी कथाओं को उन सभी गद्य शैलियों में प्रस्तुत किया जो पाठक को अपनी ओर आकर्षित करने में सक्षम है। वर्णनात्मक, चित्रात्मक, भावात्मक शैली इनके कथा साहित्य की सर्वोत्कृष्ट शैली है। ये जब किसी स्थान व्यक्ति या स्थिति–परिस्थिति का वर्णन करते हैं तो उसकी गहराई तक पहुँच जाते हैं। सूक्ष्म दृश्य दर्शन इनकी कथा शैली की एक विशेषता है। लोक जीवन की झाँकियों को उभारने के लिए इस उपन्यासकार ने अपनी इसी शैली का प्रयोग

RECENT RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES
Issue : 1, Year : 4, Apr.-May-Jun. (2017), Pages : 74-78 , ISSN 2348 – 3318
कु0 भावना अग्रवाल
International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

किया। इनकी यही मनोरम शैली ही कहीं–कही पर चित्रात्मक शैली के रूप में परिवर्तित हो गई है।

मानवीय भावों को अपनी लेखनी से उभारने में दक्ष यह अद्वितीय साहित्यकार एक तरह से ग्राम्यजनों के मनोविज्ञान का आधिकारिक वैज्ञानिक है। मटियानी जी ने अपनी अनुभूति, कल्पना और अभिव्यक्ति का सदुपयोग जिस कथा साहित्य के सृजन में किया उसके विशय तथा पात्र उस वर्ग से आते हैं जो समाज के दबे कुचले लोग हैं। यही नहीं इन लोगों को दबाने और कुचलने की धूर्तता करने वाले तत्वों को भी अपनी लेखनी का विषय बनाया। लोक जीवन को सच्चे अर्थों में प्रेमचन्द और फणीश्वर नाथ रेणु के पश्चात् समझने, परिभाशित करने में जो तीसरा कथाकार उत्पन्न हुआ वह श्री शैलेश मटियानी ही थे। पर्वतीय जन जीवन में जहाँ गरीबी और अशिक्षा ने पशुवत् जीवन जीने के लिए विवश कर दिया, वहीं बाह्य आडम्बरों ने उसे अन्दर से खोखला कर दिया। जाति–पांति के मकड़जाल में उलझकर उसका जीवन अब छुआ–छूत और शोषण की आसाध्य बीमारी से पस्त हो जाता है तब उसके पास मौत मांगने के अतिरिक्त कुछ नहीं रहता। जीवन के इस यथार्थ के साथ–साथ मटियानी जी ने अपने उपन्यासों में पर्वतीय लोक संस्कृति के भी मनोरम चित्र प्रस्तुत किये हैं। मटियानी जी के द्वारा चित्रित शब्द चित्रों में एक लोक लेखक की आत्मा दृष्टिगोचर होती हैं।

कथाकार मटियानी जी अपने पर्वतीय परिवेश के प्रति अत्यंत संवेदनशील थे। मटियानी जी ने वर्ष 1951–52 में ही अपने कुमाऊँ अंचल की बोली की बानगी, चरित्र और कथाकारों को अपनी कहानियों में उसी रंग–रूप, गंध व स्वरों के साथ पकड लिया था जिसकी बदौलत उन्हें नैतिक बोध के साथ आंचलिकता का प्रयोक्ता भी कहा जा सकता है जैसा कि चिही रसैन (पोस्टमैन) आदि कहानियों में झलकता है।

मटियानी जी का कथा साहित्य मानव जीवन के अनेक बिन्दुओं पर प्रकाश डालता है। यह जीवन चाहे नगरीय जीवन हो या ग्रामीण, दोनों ही स्थितियों का भोक्ता लेखक जब इनका चित्रण करता है तब वह इसमें डूब सा जाता है। मटियानी जी नई चेतना के कथाकार हैं। इनके कथानक जहाँ ग्राम्यांचल की सौंधी महक के पुष्प हैं वहीं नगरीय वातावरण को महकाने वाले फूल भी। पत्रकारिता जगत से संबंध रखने वाला यह लेखक जब उपन्यास के माध्यम से पत्रकारिता से संबंधित रिपोर्ताज को पाठकों के सामने रखता है तब ऐसा लगता है कि यह रिपोर्टिंग नहीं अपितु अखबार में छपी खबर है।

मटियानी जी जुझारू तेवर के थे। जीवन में भी व साहित्य सृजन में भी। परिस्थितियों से जूझते रहना मटियानी जी का जीवन धर्म बन गया था। उसी जूझते रहने से नया कथानक उपजता था, पात्र मिलते थे व तराशे जाते थे। कथाकार शैलेश मटियानी दुनिया के दुर्लभतम लेखकों में एक होंगे, जिन्होंने लेखन को जीवन धर्म बनाया, उसी को जीविका उपार्जन का माध्यम रखा, उसी के सहारे नयी रचनाओं के तत्व प्राप्त किये, जीवन पर्यन्त मुफलिसी झेली लेकिन आय का साधन लेखन ही रखा। इस मुफलिसी व दारिद्रय के बीच सारा रचना संसार चलाया। किसी प्रकार से स्वयं को जिंदा रखा। परिवार का पोषण किया और परिस्थितियों से विषय प्राप्त किये। स्पष्ट रूप से मटियानी जी नामक लेखक जीवन पर्यन्त शुद्ध मसि जीवी बने रहे।

रचना का सामाजिक प्रभाव नामलूम और मंथर गति से होता है। इसलिए इसका प्रभाव बहुत जल्दी परिलक्षित नहीं होता, लेकिन धीरे–धीरे समाज की चेतना तथा समाज के संस्कार बदलने का सामर्थ्य साहित्य में होता है। भले ही उसमें सालों–साल लग जाएँ। इसलिए साहित्यकार हो मनुष्य की प्रगति में बाधक रूढ़ियों को तोड़ने का प्रयास करना चाहिए। शैलेश मटियानी ने समकालीन संस्कृति सत्ता द्वारा प्रतिपादित मूल्यों पर प्रश्नचिह्न लगाया है और नयी मूल्य व्यवस्था का निर्माण करना चाहा है, जो सामाजिक न्याय पर आधारित हो। लेखक की कसौटी समाज से समरस को पाने में है, समाज को ठोकर मारने में नहीं। उनका लक्ष्य मनुष्य के चित्त में संवेदना और विचारों का आलोक उत्पन्न करना रहा है। यही संवेदना उसे कठिन भूमि में भी कोमल चरणों से ही चलने की दृष्टि देती है। वे निजी चिन्ताओं की अपेक्षा मनुष्य की चिन्ताओं से जुड़े। आखिरकार लेखक भी समाज का अंग होता है।

शैलेश मटियानी का रचना परिवेश अनुभव की प्रमाणिकता से युक्त होकर जहाँ एक ओर उनकी कुमाऊँ के ग्रामीण परिवेश से जुडा है वहीं दूसरी ओर उनकी संघर्ष और कर्मभूमि महानगरीय परिवेश से भी जुडा हुआ है। कुमाऊँ का परिवेश अपने प्राकृतिक परिवेश के साथ सम्पूर्णता से उभरा है। उनकी पहाड़ी परिवेश से युक्त उपन्यासों में जीवन और प्रकृति का संबंध उतना ही घना और महीन गुँथा है, जितना कहानी में किसी भी घटना या पात्रों का संबंध होता है। ग्रामीण बोध का वर्णन 'गोपुली गफूरन' में देखने को मिलता है। पहाड़ के शेराघाट की बस्तियों, नैलागाँव, ठाकुर गाँव आदि से संगठनात्मक व्यवस्था मुखरित हुई है। उनकी परिवेशगत यथार्थ वस्तुगत न होकर, उसमें कुर्मांचल की निसर्ग शोभा और वहाँ के पहाड़ी–निवासियों के जीवन संघर्श, उनकी मानस छवि, सुख–दुःख का मार्मिक वर्णन है। उनके ग्रामीण परिवेश में आत्मीयता की गंध है। उनकी यही कला उन्हें ग्रामीण जीवन के अन्य कथाकारों से अलग करती है। उनके ग्रामीण परिवेश की यह महत्ता है कि वह अपने व्यापक फलक पर बहुआयामी है, कहीं वह यथार्थ परिवेश के अन्तर्विरोधों और समस्याओं के बीच मनुष्य की जिजीविशा से बद्ध आस्था और प्राणमय राग का उद्घाटन करता है तो कहीं महानगरों से मिले तरीके से ग्राम्य जीवन में संक्रमित होते आधुनिक समर्थन और विरोधों के स्वरों को पूरी सच्चाई के साथ सम्बोधित करता है। उनकी ग्राम्य परिवेश प्रेम, आस्था, विश्वास, श्रद्धा और भक्ति से परिपूर्ण है। उन्होंने ग्रामीण परिवेश में उस आदमी और उस जिंदगी को अपना कथ्य बनाया, जो शोषण, टूटन और बीमारी के बावजूद आस्था का काँपता हुआ सूत्र थामे

RECENT RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES
Issue : 1, Year : 4, Apr.-May-Jun. (2017), Pages : 74-78 , ISSN 2348 – 3318

कु0 भावना अग्रवाल

International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

सम्भावनाओं की खोज कर रहा है। दूसरी ओर जड, रूढिवादी मूल्यों का विरोध भी किया है। ग्रामीण बोध जहाँ अपने प्राणतत्व के साथ साकार हुआ है तो वहीं महानगरीय बोध में वैयक्तिक स्वातन्त्र्य की भावना अधिक प्रबल है, सभी संबंध अर्थ की धुरी से संचालित हैं। महानगरीय परिवेश विशेषकर मुम्बई को उन्होंने 'कबूतरखाना' और 'बोरीवली से बोरीबन्दर तक' उपन्यासों में पाश्चात्य विचारधारा से प्रभावित परिवेशगत सामाजिक यथार्थ को रेखांकित किया है।

मटियानी जी ने अपने उपन्यासों में भारतीय समाज व्यवस्था को चित्रित किया है। उन्होंने पारिवारिक संबंधों का चित्रण किया है जिसके माध्यम से लेखक ने मानव समाज में व्याप्त सभी रिश्तों की अहमियत को उजागर किया है। पति–पत्नी के मधुर संबंधों को 'रामकली' उपन्यास में मधुर रूप को रामकली और बसंतलाल नामक पात्रों के माध्यम से जीवन्त चित्रण किया है। लेखक ने परिवार के अनेक संबंधों को अभिव्यक्ति दी है, जिसमें सास– बहू संबंध, मां–बंटा संबंध, पिता–पुत्री संबंध आदि। लेखक के उपन्यासों में जहाँ पति–पत्नी के आदर्श रूप देखने को मिलते हैं तो कहीं–कहीं इन संबंधों में कटु भाव भी प्रदर्शित होते हैं। इसी तरह सास–बहू के भी सौहार्दपूर्ण संबंध चित्रित होते हैं। वहीं कहीं पर सास का विपरीत रूप भी इनके उपन्यास में वर्णित हुआ है। अतः शैलेश मटियानी ने पारिवारिक संबंधों को सफल रूप में चित्रित किया है।

मटियानी जी ने उपन्यासों में राजनीति के विविध रूपों को भी चित्रित किया है। अंग्रेजों ने भारत में फूट डालो और राज करो की नीति को अपनाया था। आज भारतीय राजनीति इतनी भ्रष्ट हो चुकी है कि राजनेता जनता को झूठे आश्वासन देकर गुमराह कर रहे हैं। सत्ता प्राप्ति के लिए ये लोग विविध प्रकार के हथकण्डे अपनाते हैं। आज भारतीय राजनेता तथा प्रशासनिक उच्चाधिकारी स्वार्थ सिद्धि के लिए आम तथा निम्न कर्मचारियों को गुमराह करते हैं। मटियानी जी नेताओं पर 'बावन नदियों का संगम' उपन्यास में कहते हैं– "अगर सरकार चाहे तो वेश्यावृति को सदैव के लिए बन्द कर सकती है, पर ऐसा करने से निहित स्वार्थ वाले नेताओं की स्वार्थ पूर्ति कैसे होगी। आज राजनेता इतने भ्रष्ट हो गये हैं कि जनता को झूठे आश्वासन देकर गुमराह कर रहे हैं। नेता लोग कुर्सी के मोह में इतने अंधे हो गये हैं कि वह समाज विरोधी कार्यों को करने में भी नहीं हिचकिचाते हैं।" 'सर्पगंधा' उपन्यास में लेखक ने इसकी अभिव्यक्ति की है। आज भारतीय राजनीति हिंसा से संचालित हो रही है। राजनीतिज्ञ इसी के द्वारा सत्ता को प्राप्त कर रहें हैं।

लेखक ने नारी जीवन की आर्थिक स्थितियों का भी उपन्यासों में सशक्त चित्रण किया है। नारी को जीवन में अर्थ के अभाव में सदैव ही घुटन भरा जीवन जीते हुए दिखाया गया है। जीवन में आर्थिक संघर्ष से सदैव जूझते हुए भी परिवार के प्रति अपने उत्तरदायित्व का सम्पूर्णतः निर्वाह करती हुई दृष्टिगत होती है। 'गोपुली गफूरन' उपन्यास में गोपुली के माध्यम से लेखक ने निम्नवर्गीय परिवार में नारी के जीवन की कटु सच्चाई को अभिव्यक्ति प्रदान की है। गोपुली एक ऐसी नारी के रूप में उभरी है जो अल्पायु में उसका पति घर वापस नहीं लौटता है और बच्चों के भरण–पोषण की जिम्मेदारी उस पर आ जाती है। उसकी इस स्थिति के लिए वास्तव में समाज ही उत्तरदायी होता है क्योंकि अशिक्षित होने के कारण वह कहीं रोजगार की तलाश नहीं कर सकती है। यदि समाज में नारी को भी पुरूष के समान ही जीने के समान अवसर दिये जाएँ तो विपत्ति के समय नारी अपने पैरों पर खड़ी होकर जीवन को सामान्य स्तर प्रदान कर सकती है।

मटियानी जी एक उपन्यासकार के साथ–साथ एक कुशल कहानीकार भी रहें हैं। वे अपनी कहानियों में मूल संवेदनाओं को उकेरने में सफल हुये हैं। उन्होंने अपने भोगे हुये यथार्थ को ही अपनी तूलिका के माध्यम से कागज में स्थान दिया है। मटियानी जी की कहानियों में भी आंचलिकता का समग्र प्रभाव दिखता है। पर्वतीय अंचल के होने के कारण ग्रामीण जीवन की समस्त अभिव्यक्ति उनकी कहानियों में मिलती है। कहानी की नई संवेदना में आत्मा अन्वेषण का बड़ा योगदान है। वैसे तो सभी लेखन आत्म विश्लेषण होता है पर मेरा तात्पर्य यहाँ मुखर रचना विधान से है। रचनाकार अपना अध्येता जब स्वयं बनता है तो अपने अंतरा से चुने हुये मोती निकालता है।

देश की स्वतंत्रता एवं विभाजन के साथ ही जनमानस की त्रासदी भी जुड़ी है। जीवन की बुनियादी समस्याओं की ओर लेखकों का ध्यान आकृष्ट हुआ। मानवीय मूल्य समाप्त होने के साथ–साथ व्यक्ति आत्म संघर्ष करने लगा। मटियानी जी की कहानियों में दीन–दरिद्र व असहाय मानव की पीड़ा आसानी से देखी जा सकती है। जीवन में निर्धनता, पेट की आग को मिटाने के साधन उनके पात्रों में देखे जा सकते हैं।

कहानी लिखना लेखक के लिए यातना नहीं है, यातनापूर्ण हैं वे कारण जो लेखक को कहानी लिखने के लिए मजबूर करते हैं। और यह मजबूरी तभी होती है, जब लेखक का अपना संकट दूसरों से संबद्ध होकर अदृश्य हो जाता है, या उसकी अपनी करूणा दूसरों की संवेदना से मिलकर अनात्म हो जातक है।

मटियानी जी की कहानियां युगीन जीवन से प्रभावित है। निम्न मध्यम वर्ग की पीडा उनकी कहानियों में दृष्टिगोचर होती है। दीक्षा कहानी की नायिका अपनी बेबसी, लाचारी, व मजबूरी के कारण धर्म परिवर्तित करने को बाध्य है। पात्र के मन का विश्लेषण कर उसके मन व मानसिकता में चलने वाले ऊहापोह को शैलेश जी ने बडी सूक्ष्मता से दर्शाया है। उन्होंने अपने पात्रों की मनोवैज्ञानिक अनुभूतियों का मार्मिक चित्रण किया है। पात्र के मन में बाह्य संघर्ष की अपेक्षा आंतरिक द्वन्द्व की अधिकता है।

आज का मनुष्य नैतिकता व अनैतिकता से परे सोचने लगा है। ये मनोदशा मटियानी जी की कहानियों में देखी जा सकती है।

RECENT RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES
Issue : 1, Year : 4, Apr.-May-Jun. (2017), Pages : 74-78 , ISSN 2348 – 3318

कु0 भावना अग्रवाल

International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

आज मानवीय मूल्यों के स्थान पर व्यक्तिगत मूल्य पनप रहें हैं। तनाव के कारण मानव के भीतर मात्र वितृष्णा उप्तन्न हो रही है। मटियानी जी कहानियों में जीवन की विसंगतियों के साथ ही संवेदनाओं को तार–तार होते देखा जा सकता है। विषमताओं के कारण व्यक्ति कुंठित आत्मनिर्वासन व उदासी की पीडा को झेल रहा है।

शैलेश मटियानी एक ऐसे कथाकार सिद्ध होते हैं जिन्होंने अपनी कथाओं के माध्यम से जीवन के हर पहलू को स्पर्श किया है। इन्होंने जहाँ ग्राम्य जीवन की अशिक्षा, गरीबी, अंधविश्वास, शोषण, छुआ–छूत जैसे सामाजिक पतन के कारणों को अपनी कथाओं का विषय बनाया वहीं इसके सारल्य और निष्कलुष जीवन पर भी खुलकर लेखनी चलाई। इनकी कथाओं के पात्र जहाँ अभिजात्य वर्ग के लोग हैं, वहीं गरीबी की मार से त्रस्त लोक जीवन का भी इन्होंने संसार से परिचय कराया। कहने का आशय यह है कि शैलेश मटियानी बहुमुखी प्रतिभा के धनी होने के साथ–साथ जीवन के विविध रंगों में रंगे लेखक हैं। इनके समग्र साहित्य का अवलोकन करने से यही अनुभव होता है कि पार्वत्य भूमि का यह अनूठा रचनाकार जहाँ ग्राम्यजनों के मनोविज्ञान को चित्रित करने में सक्षम हुआ वहीं इसमें लोक जीवन के प्रति सच्ची सहानुभूति है। इस लेखक में एक ओर जहाँ प्रेमचन्द जैसी पैनी दृष्टि है वहीं फणीश्वरनाथ रेणु जैसे आंचलिक उपन्यासकार की आंचलिक संस्कृति को समझने की तीव्र बुद्धि। इनमें जहाँ जैनेन्द्र की तरह पात्रों के मनोविज्ञान को चित्रित करने की क्षमता है, वहीं यशपाल जैसे उपन्यासकार की सूक्ष्म चित्रण शैली भी मटियानी जी के साहित्य में दिखायी देती है।

मटियानी जी की सम्पूर्ण जीवन यात्रा का गहनता से अध्ययन करने पर हमें मिलता है कि वे शुद्ध लेखक थे, अपनी लीक पर चले। अपने परिवेश से ऊर्जा ग्रहण की, पात्रों को चुना और जमीन की भाषा व शब्दकोश से साहित्य सर्जना की। पचास वर्ष का सक्रिय साहित्यिक जीवन रहा। व्यक्तिगत जीवन तो संघर्ष, तिरस्कार, अपमान, अभाव और विषम परिस्थितियों से जूझने से बीता। उसी अभाव के जीवन से साहित्य की उर्वरा भूमि प्राप्त की। यही कारण था कि बाबा नागार्जुन ने कहा था कि तुम्हारे अन्दर हिन्दुस्तान का गोर्की अंगडाइयां ले रहा है।

मटियानी जी की विषय वस्तु, पात्र और भाषा सीधे जमीन से निकले होते थे जो पाठक को अन्दर से झंकृत कर देते हैं। इसी लेखन शैली ने मटियानी जी को व्यापक पाठक वर्ग दिया। वो जन लेखक हो गये यह एक बिडम्बना है कि प्रगतिशील व भद्रजन समुदाय के लेखकों ने भी उपेक्षित भाव से देखा।

मटियानी जी किसी धड़े के धोरे नहीं पड़े। अपनी प्रतिभा से ही सृजना में लीन रहे और पूर्णतः सफल रहे, कि व्यापक स्तर पर पाठकों ने सराहा और लेखक को आत्मसात किया।

मटियानी जी पूरी जिंदगी जूझते रहे, लेखकीय प्रतिभा को निखारते रहे। छपते रहे, जीवन की चुनौतियां स्वीकारते रहे, चुप नहीं बैठे। सतत् संघर्ष करना, लिखना और बिना किसी वाद के प्रभाव में आये अपनी विधा से रचना करते रहे।

मटियानी जी की जीवन रेखा साहित्य सर्जना का पथ "जहाँ चाह वहाँ राह" के विचार के साथ चली। एकता चलो रे। भोगे हुये यथार्थ की कथा को साहित्य भण्डार में बदला। मटियानी जी ने अपने पात्रों के बारे में सीधी स्पष्ट शैली में लिखा, हकीकत को नग्न व कटु रूप में रखा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

- बिन्दु अग्रवाल : 1950 : हिन्दी उपन्यास में नारी चित्रण, ओम प्रकाशन राधा कृष्णन प्रकाशन, दिल्ली।
- इंद्रनाथ मदान : 1966 : आज का हिन्दी उपन्यास, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
- प्रेमचन्द : 1967 : साहित्य के उद्देश्य, हँस प्रकाशन, इलाहाबाद।
- रामदरश मिश्र : 1968 : हिन्दी उपन्यास एक अन्तर्यात्रा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
- विजयलक्ष्मी शर्मा : 1986 : स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी उपन्यासों में चेतना के प्रतिमान, साहित्य संस्थान प्रकाशन, गाजियाबाद।
- प्रेम कुमारी सिंह : 1992 : शैलेश मटियानी के आँचलिक उपन्यास, भावना प्रकाशन, दिल्ली।
- शैलेश मटियानी : 1997 : दस प्रतिनिधि कहानियाँ, किताब घर प्रकाशन, दिल्ली।
- शैलेश मटियानी : 2001 : शैलेश मटियानी की इक्यावन कहानियाँ, विभा प्रकाशन, इलाहाबाद।
- शैलेश मटियानी : 2004 : शैलेश मटियानी की सम्पूर्ण कहानियाँ, प्रकल्प प्रकाशन, इलाहाबाद।
- प्रभा खेतान : 2003 उपनिवेश में स्त्री मुक्ति कामना की दस वार्ताएँ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
- उर्वीशचन्द्र मिश्र : 2004 : शैलेश मटियानी व्यक्तित्व और कृतित्व, साहित्य भण्डार, इलाहाबाद।